B.Ed - I^st YEAR

PAPER — C-2

* जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य ⇒

जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण का संबंध भौतिक जगत एवं आध्यात्मिक जगत से है। इसके अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं —

1) आदर्शों का ज्ञान ⇒ शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को उच्च आदर्शवादी मूल्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है। क्योंकि आदर्शवादी मूल्यों के अभाव में व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास सम्भव नहीं है। अतः आदर्शवादी मूल्य ही वह प्रथम सीढ़ी है जो कि सत्य ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।

2) विचारों में शुद्धता ⇒ जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के विचारों में शुद्धता की धारा प्रवाहित करना है। इनके अनुसार " शुद्ध विचार ही मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास का आधार होता है। इस प्रकार से शुद्ध विचारों का जीवन में अधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

3) आध्यात्मिक दृष्टिकोण का विकास ⇒ जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण का विकास करना है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अभाव में सत्य की प्राप्ति असम्भव है।

4) चिन्तन एवं तर्क शक्ति का विकास ⇒ जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए, जो कि छात्र को भौतिक जगत एवं आध्यात्मिक जगत के तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रेरित करे। चिन्तन, तर्क एवं ध्यान के माध्यम से छात्र

अपनी व्यवहारिक एवं अध्यात्मिक समस्याओं का समाधान करता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य छात्र की चिन्तन शक्ति एवं कल्पना शक्ति का विकास करना है।

5] नैतिकता का विकास ⇒ शिक्षा के उद्देश्यों की श्रेणी में नैतिकता के विकास को भी रखा गया है क्योंकि नैतिकता के विकास द्वारा ही ध्यान, मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों का विकास होता है। अतः नैतिकता के आधार पर व्यवहारिक जीवन की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। तथा अध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता का विकास होना चाहिए।

6] चरित्र निर्माण का उद्देश्य ⇒ शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य चरित्र का निर्माण करना है। चरित्र के अभाव में कोई भी राष्ट्र महान नहीं बन सकता है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा द्वारा छात्रों के चरित्र का निर्माण किया जाय तथा उनमें सद्गुणों का भी विकास किया जाय।

7] मानवीय मूल्यों का विकास ⇒ जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के द्वारा मानवीय मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषपूर्ण होने के कारण ही मूल्यों मे ह्रास हुआ है। अतः जे० कृष्णमूर्ति एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के विकास की बात करते हैं जो मानवीय मूल्यों का विकास कर सके।

8] पूर्णतया जीवन का उद्देश्य ⇒ शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानव जीवन को पूर्ण स्वरूप में विकसित करना है अर्थात छात्र का सर्वांगिण विकास करना है। शिक्षा के द्वारा मानव इस संसार में सुख-शान्ति की प्राप्ति करता है। अर्थात ~~धीरे-धीरे~~ धीरे-धीरे अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करना

10/5/2020

B.Ed - IInd YEAR

C-8 (Knowledge & curriculum)

* ज्ञान से क्या तात्पर्य है? उसके महत्व पर प्रकाश डालें।

Ans. ज्ञान मीमांसा के अंतर्गत सबसे बुनियादी और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि ज्ञान क्या है? ज्ञान का अर्थ क्या है? जानना क्या होता है? इस बात का तात्पर्य है कि हम किसी को जानते हैं, जानने के बाद प्रयोग मुख्य रूप से निम्न तीन अर्थों में होता है —

1) परिचय ⇒ हम किसी व्यक्ति को जानते हैं, का अर्थ यह है कि उस व्यक्ति से परिचित हैं। परिचित होने से हम उस व्यक्ति के सम्बन्ध में कई प्रकार का ज्ञान रखते हैं। परन्तु परिचय द्वारा प्राप्त सूचना पर्याप्त नहीं होती, क्योंकि एक व्यक्ति डा० राधाकृष्णन से परिचित हुए बिना उस पर लिखी पुस्तकों को पढ़कर उसके बारे में उस व्यक्ति से अधिक जान सकता है जो डा० राधाकृष्णन से परिचित है।

2) कार्य करने की योग्यता ⇒ देखने में यह अक्सर आता है कि जानने शब्द का प्रयोग कार्य करने व सिखने के अर्थों में होता है, जैसे — वह तैरना जानता है इसका अर्थ यह है कि उसने तैरना सीखा है। इसमें तैरने कि योग्यता है। योग्यता से अभिप्राय कार्य करने की कुशलता है।

3) प्रतिज्ञप्ति ⇒ यह अर्थ ऐसा है जो दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। जब हम यह कहते हैं कि हम जानते हैं तो इसका अर्थ होता है कि हम किसी बात को जानते हैं। बात का यहाँ पर अर्थ एक प्रतिज्ञप्ति से होता है, जैसे - हम जानते हैं कि "हम शिमला में घूम रहे हैं।" "हमारी मातृभाषा हिन्दी है"। आदि।

4]

ज्ञान का महत्व ⇒ मानव जीवन के लिए ज्ञान का बहुत महत्व है। आधुनिक युग में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है इसलिए ज्ञान का महत्व और भी बढ़ गया है। ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है।

"ज्ञान ही गुण है" ज्ञान मनुष्य को अंधेरे से प्रकाश में ले जाता है। भारतीय दर्शन के अनुसार "ज्ञान मानव जीवन का सार है"। ज्ञान से बढ़कर कोई सुख नहीं है। ज्ञानी मनुष्य अपने ज्ञान के माध्यम से स्वयं तथा दूसरे का कल्याण करता है। ज्ञान से चरित्र का बोध होता है और ज्ञान की आराधना करने से अज्ञान का नाश होता है। भारत के मनीषियों ने तो यहाँ तक कहा है कि "ज्ञान समुद्र के बिना अमृत है, बिना औषधि के रसायन है और किसी की अपेक्षा न रखने वाला ऐश्वर्य है।"

आज भी इस वैज्ञानिक युग में ज्ञान मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है जो पग-पग पर मार्गदर्शन करता है। ज्ञान के माध्यम से मनुष्य का मनोबल और प्रबल होता है तथा आत्मविश्वास बढ़ता है।

ज्ञान को मस्तिष्क का भोजन कहा गया है ज्ञान से मनुष्य का मानसिक विकास होता है साथ ही बौद्धिक विकास के द्वारा छात्रों में स्मृति, विवेचक, कल्पना व तर्क शक्ति का विकास होता है। ज्ञान के माध्यम से हम भौतिक जगत और अध्यात्मिक जगत को अग्रसर हो सकते हैं। ज्ञान के अभाव में मनुष्य का अस्तित्व पशु के समान है।

12/05/2020

Rajshankar College of Education · C-1°

विशिष्ट शिक्षा (Special Education)

विशिष्ट शिक्षा एक व्यवसायिक शिक्षा है। प्रतिभाशाली बालकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रविधियों तथा साधनों को विशिष्ट शिक्षा द्वारा उपलब्ध करती है।

विशिष्ट शिक्षा के उद्देश्य :—

1. शारीरिक दोष युक्त बालकों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्व पहचान तथा निर्धारण करना।
2. शारीरिक दोष की दशा में इससे पहले की वे गंभीर अवस्था में जाए उससे पहले रोकथाम के उपाय करना।
3. बालकों को नवीन विधियों द्वारा शिक्षा देना।
4. अपंग बालकों की शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना तथा सुधार हेतु सामूहिक प्रयास करना।
5. शारीरिक रूप से अक्षम बालकों के माता-पिता को उनकी योग्यता एवं कुशलताओं के बारे में समझाना। तथा उनकी कमियों में सुधार करना।
6. शारीरिक रूप से बाधित बालकों का पुनर्वास करना।
7. शिक्षा की राष्ट्रीय नीति (1986) में स्वंय एवं जीवन यापन के सिद्धान्तों का क्रमबद्धता से निर्णय करना।

पहले विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट कक्षाओं में विशिष्ट शिक्षकों द्वारा विशिष्ट बालकों को दी जाती थी। लेकिन समावेशी शिक्षा व्यवस्था में विशिष्ट बालकों को सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षाओं में दी जाती है।

एकीकृत शिक्षा (Integrated Education)

एकीकृत या एकीकरण का शाब्दिक अर्थ है कि सबको एक साथ लेकर चलना।

एकीकरण के प्रकार —

⇒ शारीरिक एकीकरण (Physical Integration)
⇒ सामाजिक एकीकरण (Social Integration)
⇒ शैक्षिक एकीकरण (Academic Integration)

एकीकरण निम्न प्रकार स्थापित किया जा सकता है —

⇒ सामान्य विद्यालय में विशिष्ट सेवाएँ उपलब्ध कराना।
⇒ शिक्षाविदों तथा शिक्षण के तरीकों का सहयोग।
⇒ बाधित बालकों का शैक्षिक कक्षाओं तथा अन्य सम्बन्धित कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जाना जैसे - संगीत, कला, गोष्ठी, भ्रमण इत्यादि।
⇒ अपंग तथा सामान्य बालकों का एक समान दैनिक कार्यक्रमों का निर्धारण करना।
⇒ बाधित बालकों को अन्य सामान्य बालकों के साथ क्रीड़ास्थल, पुस्तकालय तथा अन्य सुविधाओं को साथ-साथ उपलब्ध करना।
⇒ माता-पिता से विचार-विमर्श करना तथा उन पर अमल करना।
⇒ समस्त बालकों को मानवीय अन्तरों को स्वीकार करने तथा समझने की शिक्षा देना।
⇒ सामान्य तथा बाधित बालकों को एक-दूसरे के प्रति सहयोग की भावना का विकास करना।
⇒ सहयोगी वातावरण विकसित करना।

एकीकृत शिक्षा की विशेषताएँ:-

1. एकीकृत शिक्षा विशिष्ट शिक्षा का विकल्प नहीं है। एकीकृत शिक्षा विशिष्ट शिक्षा की पूरक है। एकीकृत शिक्षा बहुत कम शारीरिक रूप से बाधित बालकों को प्रदान की जाती है। जबकि विशिष्ट शिक्षा गम्भीर रूप से बाधित बालकों को प्रदान की जाती है।
2. एकीकृत शिक्षा के अन्तर्गत शारीरिक रूप से कम बाधित बालक सामान्य बालकों के साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं, जबकि विशिष्ट बालको (ज्यादा अपंग) को उनकी आवश्यकतानुसार शिक्षा तथा शिक्षण विधियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं।
3. एकीकृत शिक्षा अपंग बालकों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है।
4. एकीकृत शिक्षा समाज में अपंग तथा सामान्य बालकों के मध्य स्वस्थ सामाजिक वातावरण तथा सम्बन्ध बनाने में प्रत्येक स्तर पर सहायक है।
5. एकीकृत शिक्षा व्यवस्था में अपंग बालक भी सामान्य बालकों की तरह महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।
6. एकीकृत शिक्षा अपंग बालकों के अन्दर आत्मविश्वास जागृत करता है।
7. यह शिक्षा अपंग बालकों के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने तथा उनके नागरिक अधिकारों को सुनिश्चित करती है।
8. एकीकृत शिक्षा अध्यापकों, तथा माता-पिता के सामूहिक प्रयास पर आधारित है।
9. एकीकृत शिक्षा शिक्षण की समानता तथा अवसर की समानता के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक आयाम है।
10. एकीकृत शिक्षा अपंग बालकों को मानसिक समस्याओं का सामना करने के योग्य बनाती है।

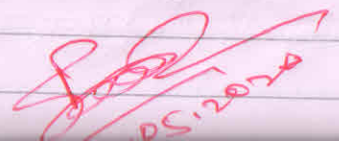

C-III R.S. college Bare

पर्यावरण संरक्षण में विद्यालय की भूमिका

मानव एवं जीवधारियों की रक्षा के लिए पर्यावरण संरक्षण अति आवश्यक है। बहुमुखी विकास की गति धीमी न पड़ जाये इसके लिए पर्यावरण संसाधनों का दोहन न करके संरक्षण पर विचार करना नितान्त आवश्यक है क्योंकि जीवन दायनी शक्तियों में जल, वायु मिट्टी खनिज, वनस्पतियों आदि को भविष्य के लिए संरक्षण न किया गया तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर मानव जाति एवं प्राणी जगत का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा। हमारा अस्तित्व ही मिट जाएगा। अत: प्रकृति को दूषित करने के स्थान पर उसके संरक्षण का तरीका शिक्षक द्वारा छात्रों को बताएँ।

1:- जल संरक्षण

2:- वायु संरक्षण

3:- मृदा संरक्षण

4:- वन संरक्षण

5 - जीव संरक्षण

6 - खनिज संरक्षण

जल संरक्षण :→ 'जल ही जीवन' जीवन की कल्पना जल के बिना असम्भव है। शिक्षक गण छात्रों को यह ज्ञान कराना चाहिए कि किन किन माध्यमों से जल संरक्षण किया जा सकता दूषित जल को शुद्ध किया जा सकता है प्रदूषित जल की समस्या का समाधान किया जाय।

जल संरक्षण के लिए आवश्यक है कि वर्षा के जल का संग्रहण किया जाय साथ ही साथ तालाबों नदियों झीलों, भूमिगत जल स्तर का विशेष ध्यान दिया। पानी को दुषित करने, दोहन करने, दुरूपयोग करने से बचाजाय

जल को प्रदूषित होने से रोकने, जल का शुद्धीकरण पुनः उपयोग में लाने एवं जल स्वच्छ बनाए रखने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जाय।

① नगरों का कूड़ा करकट, गंदे नाले का पानी आदि आबादी से दूर रखने के लिए कचरा प्रबन्धन की उचित व्यवस्था की जाय।

② औद्योगिक कल कारखानों से निकलने वाले अवशिष्ट को नदियों में न मिलने दिया जाय

③ दूषित जल का शुद्धिकरण की प्रक्रिया पर अधिक बल दिया

वायु की अशुद्धता दूर करने में विधालय की भूमिका :-

वायु जीव का आधार प्राणदायनीय शक्ति है अतः वायु की शुद्धता पर हमारा स्वास्थ निर्भर करता है वायु में प्राकृतिक अशुद्धी ही वायु प्रदुषण को जन्म देती है जिसके लिए हम सभी जिम्मेदार है स्वचालित मशीनों कल कारखाने मोटर गाड़ियों भवन निर्माण कार्यों एवं वातानुकूलित संयंत्रों आदि द्वारा वायु दूषित हो रहा है निम्न उपायों को अपना कर दूषित वायु को दूषित होने से रोका जा सकता है

① औद्योगिक इकाई से निकलने वाले धुंए में कार्बन एवं सल्फर की मात्रा कम किया जाय

② अधिक चिमनियों की ऊँचाई अधिक से अधिक बनायी जाय

③ चिमनियों में फिल्टर संयंत्रों का प्रयोग किया जाय

④ अधिकाधिक वृक्षा रोपण किया जाय

⑤ वाहनों तथा मशीनों को धुँआ रहित बजाया जाय

⑥ C.F.C. गैसों का कम से कम प्रयोग किया जाय

⑦ छात्रों में वायु संरक्षण में वायु की शुद्धता के प्रति जागरूक किया जाय।